AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume: 1 Issue: 3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच उनके लिंग और स्थान के संबंध में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन

इंदूसेन,
डॉ. नीरू वर्मा
शिक्षाशास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

DECLARATION:I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNALIS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT /PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/ UPDATES, IHAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER /ARTICLE.

सारांश

पर्यावरण न केवल आत्मनिर्भरता के लिए, बल्कि आरामदायक जीवन के लिए भी मानव जाति को वह सब कुछ प्रदान करने में सक्षम है जिसकी उसे आवश्यकता है। हमारे चारों ओर जो कुछ भी है उसे पर्यावरण के नाम से जाना जाता है। यह जीवित और निर्जीव दोनों तरह की संस्थाएं हो सकती हैं। इसमें भौतिक, रासायनिक और अन्य प्राकृतिक शक्तियां भी शामिल हैं। हमारे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हमारी प्रमुख चिंता है। पर्यावरण शिक्षा, चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक, का वास्तविक उद्देश्य लोगों में जागरूकता पैदा करना है। उद्देश्यपूर्ण जांच का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिंग और इलाके के संबंध में पर्यावरण जागरूकता स्तर का पता लगाना था। इस अध्ययन के संचालन के लिए, यादृच्छिक नमूना तकनीक को अपनाकर सरकारी स्कूलों के 240 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का एक नमूना चुना गया था। डॉ. प्रवीण कुमार झा (1998) द्वारा विकसित और मानकीकृत पर्यावरण जागरूकता क्षमता माप (ईएएएम) का उपयोग उत्तर प्रदेश के जिला अयोध्या के सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों से डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था। मतलब, एस.डी. और टी–टेस्ट का उपयोग डेटा के विश्लेषण के लिए किया गया था। अध्ययन में यह पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में उनके लिंग और स्थानीयता के संबंध में पर्यावरण जागरूकता में कोई बड़ा अंतर नहीं दिखता है। यह पता चला कि छात्र अपने परिवेश के संबंध में अपने पर्यावरण के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं और लगभग उसी प्रकार की पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

मुख्यशब्द: पर्यावरण, पर्यावरण–जागरूकता, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume: 1 Issue: 3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

परिचय

ग्रह पर मानव अस्तित्व के लिए सबसे आवश्यक उपकरणों में से एक पर्यावरण है। पर्यावरण हम सभी के लिए पोषण का स्रोत और अस्तित्व का साधन दोनों है। हवा, पानी और जमीन के बिना जीना असंभव होगा। पर्यावरणीय समस्याएँ एक विश्वव्यापी मुद्दा है जिसका समुचित समाधान किया जाना चाहिए। हाल के वर्षों में बढ़ती मानव आबादी और हर क्षेत्र में विकास के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय चुनौतियाँ कई गुना बढ़ गई हैं। प्रौद्योगिकी नवाचारों और बदलती जीवन शैली की आदतों के लिए मनुष्य की प्यास ने ग्रह के लिए एक गंभीर खतरा पैदा कर दिया है, और इसके परिणामस्वरूप, प्रदूषण का स्तर खतरनाक गति से बढ़ गया है। स्वस्थ पर्यावरण को संरक्षित करने और बनाए रखने के लिए पर्यावरण जागरूकता आवश्यक है। पर्यावरण शिक्षा प्रदान करके पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा दिया जा सकता है। बड़े पैमाने पर छात्रों और समुदाय को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरणीय समस्याओं के लिए स्थानीय और वैश्विक समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा जब तक कि उन्हें मुद्दों के बारे में जागरूक नहीं किया जाता है। इसलिए, यह पता लगाने के लिए कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में कितनी जागरूकता है और पर्यावरण उनके दैनिक जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है, शोधकर्ता ने सोचा कि इस विषय का पता लगाना सार्थक होगा। हिमाचल प्रदेश के जिला सोलन के माध्यमिक विद्यालय के छात्र पर्यावरण और पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में कितने जागरूक हैं, इसकी जांच करना महत्वपूर्ण है। संधू, (2015) ने लिंग और स्थान के संबंध में माध्यमिक छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया और खुलासा किया कि महिला छात्रों ने इस क्षेत्र में पुरुष छात्रों से काफी बेहतर प्रदर्शन किया। हालाँकि, जब ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में, शहरी क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता का स्तर बहुत अधिक था। गुप्ता, (2017) ने शहरी और ग्रामीण स्कूली छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता के स्तर का आकलन करने के लिए रायपुर में एक जांच की। हसीनताज द्वारा विकसित "पर्यावरण जागरूकता स्केल" का उपयोग पर्यावरण जागरूकता को मापने के लिए किया गया था। अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, शहरी और ग्रामीण स्कूलों में लड़कों और लड़कियों में जागरूकता का समान स्तर है। अक्कोर और गुंड्ज, (2017) ने पाया कि महिला छात्रों में पर्यावरण के प्रति उच्च दृष्टिकोण होता है और वे पुरुष छात्रों की तुलना में पर्यावरण के मुद्दों के बारे में अधिक चिंतित होती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. जिला अयोध्या के उच्चतर माध्यमिक सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच उनके इलाके के संबंध में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

अध्ययन की परिकल्पना

इस अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ विकसित की गई हैं:

1. उत्तर प्रदेश प्रदेश के जिला अयोध्या के हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्र पर्यावरण के प्रति जागरूक होंगे.
2. सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण संबंधी जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से संबंधित सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

क्रियाविधि

जानकारी एकत्र करने के लिए वर्तमान जांच में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति को नियोजित किया गया था।

अनुसंधान उपकरण

वर्तमान जांच के लिए डेटा संग्रह पर्यावरण जागरूकता क्षमता माप (ईएएएम) का उपयोग करके किया गया था, जिसका निर्माण और मानकीकरण डॉ. प्रवीण कुमार झा (1998) द्वारा किया गया है।

विश्लेषण और डेटा व्याख्या

डेटा का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक आंकड़ों का उपयोग किया गया था, और लिंग और क्षेत्र के संबंध में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता की जांच करने के लिए एक टी–परीक्षण लागू किया गया था।

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता

अन्वेषक द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया गया। अन्वेषक ने भारतीय स्थिति में मानकीकृत और व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले उपकरण अर्थात् ईएएएम यानी पर्यावरण जागरूकता क्षमता माप (1998) की मदद से वांछित जानकारी एकत्र की। प्राप्त आँकड़ों का आवृत्ति वितरण तालिका–1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1: उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पर्यावरण जागरूकता स्कोर की आवृत्ति वितरण

क्र.सं.	जागरूकता स्कोर	आवृत्ति	छात्रों का %
1.	37-51	216	90%
2.	16-36	24	10%
3.	0-15	0	0%

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

तालिका 1 से पता चलता है कि लगभग 90: छात्रों ने 37—51 के बीच स्कोर किया और लगभग 10 प्रतिशत छात्रों ने 16—36 के बीच स्कोर किया। निर्देशों के अनुसार, यदि छात्रों ने 37—51 के बीच स्कोर किया है, तो उन्हें पर्यावरण के प्रति उच्च जागरूकता स्तर वाला माना जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अधिकांश छात्र छात्रों के जागरूकता स्तर के वास्तविक अंतर को दर्शाते हैं।

2. पुरुष और महिला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता

कक्षा के पुरुष और महिला छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करने के संबंध में टी—मान प्राप्त करने के लिए सांख्यिकीय गणना का विवरण प्राप्त आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। अन्वेषक ने पुरुष और महिला छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना करने का प्रयास किया

प्राप्त डेटा से माध्य, एसडी और टी— मानों की सहायता से स्तर। माध्य, एसडी और टी—अनुपात के मान नीचे तालिका—2 में दिए गए हैं।

तालिका 2: लिंग के आधार पर माध्य, एसडी और टी—मान

क्र.सं.	लिंग	एन	माध्य	एसडी	डी.एफ	टी—मान
1.	पुरुष	120	40.85	3.87	238	0.18 महत्वपूर्ण नहीं है
2.	महिला	120	40.94	4.01		

तालिका—2 से यह स्पष्ट है कि यह मान दो समूहों अर्थात् पुरुष और पुरुष के बीच के अंतर के महत्व का परीक्षण कर रहा है।

महिला छात्रों की संख्या 0.18 थी जो कि महत्व के 0.05 स्तर पर भी महत्वपूर्ण नहीं पाई गई। इसका मतलब यह है कि तुलना के तहत दो समूह यानी पुरुष और महिला अपने पर्यावरण जागरूकता पर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं। हालाँकि दोनों समूहों के माध्य में मामूली अंतर संयोग कारक से है, वास्तविक अंतर से नहीं। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि तुलना के तहत दोनों समूह पर्यावरण जागरूकता पर एक जैसे हैं।

अतः क्रम संख्या 2 की परिकल्पना जो "उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा" बताई गई है, स्वीकार की जाती है।

3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से संबंधित छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता के अंतर का अध्ययन करने के संबंध में टी—मान प्राप्त करने के लिए सांख्यिकीय गणना का विवरण अन्वेषक द्वारा विश्लेषण किया गया है। अन्वेषक ने माध्य, एसडी और टी—अनुपात की गणना करके ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

से संबंधित उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता पर अंतर का पता लगाने का प्रयास किया। जिसका मान नीचे दी गई तालिका –3 में दिखाया गया है:

तालिका 3: स्थानीयता के आधार पर माध्य, एसडी और टी–मान

क्र.सं.	स्थान	एन	**माध्य**	**एसडी**	**डी.एफ**	**टी–मान**
1.	ग्रामीण	80	40.44	4.57	158	1.56 **महत्वपूर्ण नहीं है**
2.	शहरी	80	41.24	3.35		

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि 1.56 का परिकलित टी–मान महत्व के स्तर तक नहीं पहुंच पाया।
आत्मविश्वास का स्तर 0.05. इसका मतलब है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से संबंधित 1 छात्रों के दो समूह पर्यावरण जागरूकता के संबंध में अपनी राय में भिन्न नहीं हैं। हालाँकि, उनके औसत अंकों में अंतर आकस्मिक कारक या त्रुटियों के कारण था, न कि वास्तविक अंतर के कारण। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की तुलना में दोनों समूह पर्यावरण जागरूकता के मामले में एक जैसे हैं। इसलिए, क्रम संख्या 6 पर परिकल्पना, जिसे "ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से संबंधित सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा" कहा गया है, स्वीकार की जाती है।

निष्कर्षों की खोज

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए:

1. अध्ययन के निष्कर्षों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जिला सोलन के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने पर्यावरण के बारे में उच्च स्तर की जागरूकता दिखाई है।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरुष और महिला छात्रों में पर्यावरण जागरूकता पर कोई खास अंतर नहीं था।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता पर कोई खास अंतर नहीं था।

नतीजों की चर्चा

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिंग में पर्यावरण जागरूकता में कोई बड़ा अंतर नहीं दिखता है। ऐसा लगता है कि वे अपने परिवेश के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं और लगभग एक ही प्रकार की पर्यावरण संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। उपरोक्त चर्चा से पता चलता है कि पुरुष और महिला दोनों छात्र उच्च स्तर की पर्यावरण जागरूकता दिखाते हैं। फिर से इलाके के मामले में ग्रामीण और शहरी छात्र अपने परिवेश में एक ही प्रकार की पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं। यह पाया गया कि छात्र हैं। अपने परिवेश के संबंध में अपने पर्यावरण के प्रति अच्छी तरह से जागरूक हैं।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ नीचे सूचीबद्ध हैं

1. पर्यावरण शिक्षा में खेल–आधारित गतिविधियों को शामिल किया जाना चाहिए जो छात्रों को उस पर्यावरण के बारे में परियोजनाएं बनाने के लिए प्रोत्साहित, प्रेरित और प्रेरित करें जिसमें वे रहते हैं।
2. राज्य सरकार को विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम और पुनश्चर्या पाठ्यक्रमध्अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए जिसमें छात्रों को आम जनता को जागरूक करने और पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर अपने ज्ञान को अद्यतन करने का अवसर दिया जाना चाहिए।
3. छात्रों को उन कार्यशालाओं और सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जहां विश्व के खतरों पर चर्चा की जाती है।
4. पर्यावरण के अनुकूल प्रणाली के विकास पर अनुसंधान के लिए धन प्रदान करके इको क्लब की गतिविधियों को मजबूत किया जाना चाहिए क्योंकि वे हमारे आसपास प्रकृति के महत्व के बारे में अगली पीढ़ी की समझ विकसित करने में महत्वपूर्ण हैं।
5. यह भी सुझाव दिया गया है कि छात्रों को ऐसे सभी कार्यक्रमों और गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिनका उद्देश्य पर्यावरण को समृद्ध और संरक्षित करना है और छात्र हमारी भावी पीढ़ी के लिए हमारी प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए उन्हें अपने दैनिक जीवन में लागू कर सकते हैं।

भविष्य की जांच के लिए सुझाव

पर्याप्त और व्यवस्थित जांच के निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए, पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन अनुसंधान का एक बहुत व्यापक क्षेत्र है।

भविष्य की जांच के लिए निम्नलिखित विचार सुझाए गए हैं

1. निजी और सरकारी स्कूलों में छात्रों की पर्यावरण जागरूकता की तुलना करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. कॉलेज जाने वाले छात्रों की पर्यावरण जागरूकता की जाँच के लिए एक अध्ययन आयोजित किया जा सकता है।
3. पर्यावरण और प्रकृति की सुरक्षा के उपाय सुझाने के लिए पर्यावरणीय गिरावट के कारणों की जांच के लिए एक अध्ययन किया जा सकता है।
4. छात्रों और शिक्षकों में पर्यावरण अनुकूल दृष्टिकोण विकसित करने और जागरूकता पैदा करने के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयासों का अध्ययन किया जा सकता है।
5. राज्य के अन्य जिलों में भी इसी तरह की जांच की जा सकती है. क्योंकि यह केवल उत्तर प्रदेश के जिला अयोध्या को कवर करता है।

संदर्भ

1. अक्कोर इ, गुंडुज उत्तरी साइप्रस में पर्यावरण शिक्षा के प्रति विश्वविद्यालय के छात्रों की जागरूकता और दृष्टिकोण का अध्ययन। यूरेशिया जर्नल ऑफ मैथमेटिक्स, साइंस एंड टेक्नोलॉजी एजुकेशन,2017:14(3):1057–1062।

AIRO JOURNALS | Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

2. घोष के. असम राज्य के गोलाघाट जिले के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 2014:19(3)। www-iosrjournals-org
3. गुप्ता एन. शहरी और ग्रामीण स्कूली छात्रों की पर्यावरण जागरूकता, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग डेवलपमेंट एंड रिसर्च, 2017:5(3)।
4. कोटवाल एम, डोगरा एस. भारत के जम्मू और कश्मीर की भद्रवाह तहसील के ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जागरूकता का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (आईजेएसआर),2022:11(5):259–262।
5. https://doi-org/10-21275/sr22503113014
6. कौल एल. शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति (चौथा संस्करण)। विकास प्रकाशन, 2009।
7. कुमार एस्टालिन पी. उच्च माध्यमिक छात्रों और इसे प्रभावित करने वाले कुछ शैक्षिक कारकों के बीच पर्यावरण जागरूकता का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 2011, 1.
8. कुमार शर्मा एन. (एन.डी.). लिंग, ग्रामीण–शहरी पृष्ठभूमि और शैक्षणिक धाराओं के संबंध में कॉलेज के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन।
9. संधू एस.एस. लिंग और स्थान के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता, 2015:3(4):1188–1192।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there in noun accepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification/ Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo)in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

इंदूसेन
डॉ. नीरू वर्मा